Notes

विद्यालयी शिक्षा के आर्थिक दृष्टिकोण -

विद्यालयी शिक्षा के आर्थिक आधारों का सम्बंध छात्रों में धन के उचित एवं सार्थक उपयोग का दृष्टिकोण विकसित करने से है।

1- सर्वप्रथम शिक्षा का सम्बन्ध धन से नहीं जोड़ना चाहिए शिक्षा ज्ञान का साधन है, तथा ज्ञान का प्रमुख सम्बन्ध कभी धन से नहीं होसकता वर्तमान समय एक छात्र अपने शिक्षक समान इसलिए नहीं करता क्योंकि शिक्षक उनको शुल्क नहीं देने पर उन्हें कक्षा से बाहर निकाल देता है। अतः धन एवं शिक्षा दोनों को पृथक-पृथक प्रयास करने का चाहिए

2. छात्रों को धन के सार्थक उपयोग बारे में सामान्य जानकारी प्रदान करना चाहिए जैसे धन का सर्वश्रेष्ठ उपयोग स्वास्थ्य एवं शिक्षा के लिए किया जाना चाहिए इसके पश्चात धन का उपयोग अन्य साधनों के लिए किया जाना चाहिए। वर्तमान में धन का सदुपयोग न होने के कारण अनुचित प्रदर्शन की स्थिति देखी जाती है।

3 छात्रों को विविध प्रकार के आर्थिक अवधारणाओं से परिचित कराया जाना चाहिए

4. छात्रों की भावनाओं का विकास करना चाहिए जिसमें प्रत्येक छात्र प्रत्येक संसाधन का सदुपयोग कर सकें

Scanned with CamScanner

Notes

विद्यालयी शिक्षा के विकास सम्बन्धी आधार :

विद्यालयी शिक्षा में ज्ञानात्मक वर्गों का चयन छात्रों का सर्वांगीण विकास के आधार बनाकर करना चाहिए क्योंकि प्रत्येक अभिभावक यही चाहता है। उनके बालक का विकास प्रत्येक पक्ष की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हो।

1- विद्यालयी शिक्षा में शारीरिक विकास सम्बन्धी गतिविधियों एवं नियमों का समावेश प्राथमिक स्तर से ही होना चाहिए।
जैसे - सन्तुलित भोजन एवं व्यक्तिगत स्वच्छता सम्बन्धी प्रकरणों को सम्मिलित किया जाता है।

2. विद्यालयी शिक्षा में मानसिक विकास से सम्बन्धित गतिविधियों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। इसके लिए छात्रों को सामूहिक गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए प्रेरित करना चाहिए इसके लिए छात्रों को सामोहिक गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है।

3- विद्यालयी शिक्षा में चारित्रिक विकास के प्रक्रिया से सम्बन्धित तथ्यों को सम्मिलित किया जाना चाहिए क्योंकि विद्वानों का मानना है कि धन एवं स्वास्थ्य दोनों से महत्वपूर्ण तथ्य चरित्र होता है। जिस व्यक्ति का चरित्र नष्ट हो जाता है। उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है। इसलिए विद्यालयी विद्यालयी शिक्षा में चरित्र सम्बन्धी शिक्षा एवं तथ्यों का समावेश प्राथमिक स्त

Notes

से लेकर उच्च स्तर का रहना चाहिए।

4- विद्यालयी शिक्षा में कौशल विकास का मूल आधार बनाना चाहिए क्योंकि सामाजिक जीवन में कुशलता प्रदान करना है, छात्र का प्रमुख लक्ष्य है। कुशलता के लिए छात्रों में व्यवहार कौशल, जीवन कौशल, अधिगम कौशल, सामाजिक कौशल, स्वास्थ्य सम्बन्धी विकास सामग्री का समावेश प्राथमिक स्तर से ही करना चाहिए

5- विद्यालयी शिक्षा में तकनीकी शिक्षा के विकास सम्बन्धी सामग्री के समावेशन की व्यवस्था करनी चाहिए

विचार धाराएँ और शैक्षिक दर्शन
Ideologys and Educational Visions

1- सामाजिक विचारधाराएँ
2 दार्शनिक विचारधाराएँ
3 पारिवारिक विचारधाराएँ
4 मनोवैज्ञानिक विचारधाराएँ
5 शिक्षाशास्त्रियों के विचार
6 शिक्षक के विचार

पाठ्यक्रम के विकास पर विभिन्न विचारधाराओं का व्यापक प्रभाव पड़ता है। विचारधाराओं का आधार पाठ्यक्रम पर ही निर्धारित होता है जैसे आदर्शवादी समाज दार्शनिक पाठ्यक्रम के को निर्धारित किया जाता है।

Unit - 2

Notes

ज्ञान एवं ~~पाठ्यक्रम~~ विद्यालय पाठ्यक्रम

Knowledge and school curriculam

ज्ञान के विभिन्न स्वरूप ~~ज्ञान~~ समाज में प्रचलित हैं जिनको विभिन्न नामो से जाना जाता है जैसे - ~~विभिन्न~~ सभायो में ज्ञान, भौतिक ज्ञान, दार्शनिक ज्ञान, गृह विज्ञान राजनैतिक ज्ञान नैतिकता का ज्ञान एवं आदर्शवादी ज्ञान है इस सभी प्रकार के ज्ञान का उद्देश्य मानव के सर्वांगीण विकास करना शिक्षा का उद्देश्य यही होता है, कि बालक किसी क्षेत्र से वंचित न रहे ज्ञान का स्वरूप में ~~में सर्वश्रेष्ठ~~ विद्यालयों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। किसी भी प्रकार ज्ञानात्मक रूप रेखा संगठित स्वरूप विद्यालयों में संगठित होता है। वास्तव में विद्यालय में ही सर्वांगीण विकास होता है।

जैसे - प्राथमिक स्तर पर बालकों का स्वभावगत पर्यावरणीय विकास शिक्षा के परिवेश में ही होता है। विज्ञान एवं ज्ञान सजीव एवं निर्जीव वस्तुओं में प्रदान की जाती है।

विद्यालयों में ज्ञान का स्वरूप उपयोगी सरल एवं ~~सहयोगी~~ स्वभाविक रूप से प्रदर्शित हो। और छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके।

Notes पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या और पाठ्य-पुस्तकों का सम्बन्ध -

Relationship among Curriculum syllabus and textbook

पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण भाग है। जिसमें पढ़ायी जाने विषय वस्तु का विवरण और उससे सम्बन्धित निर्देशों का उल्लेख होता है। इसी विषय वस्तु पर पाठ्य पुस्तकों की रचना की जाती है।

पाठ्यचर्या पाठ्य पुस्तकों की रचना के लिए एक आधार का कार्य करती है। इस प्रकार पाठ्य पुस्तक पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।

क्योंकि शिक्षक एवं विद्यार्थी के माध्यम से पाठ्य पुस्तक एवं पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति होती है।

पाठ्यचर्या पाठ्यपुस्तकों में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। इस घनिष्ठ सम्बन्ध का निर्माण विषय वस्तु पर माना गया है।

पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तक तीनों का उद्देश्य छात्रों की उनकी आवश्यकता एवं योग्यता, तथा अध्ययन सहायक सामग्री उपलब्ध करना है।

पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम का एक भाग माना जाता है। पाठ्यपुस्तक पाठ्यचर्या की विभिन्न अंग है। यह आधुनिक प्रक्रिया शिक्षक द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रयोगों के माध्यम से किया जाता है।